

अध्याय : 5 शरीर मे गति

- हमारे शरीर में स्वतः ही अनेक गतियाँ निरंतर होती रहती हैं।
- चलना , टहलना , दौड़ना , उड़ना , छलाँग मारना , रेंगना एवं तैरना इत्यादि।
- हम शरीर के विभिन्न भागों को उसी स्थान से मोड़ अथवा घुमा पाते हैं , जहाँ पर दो हिस्से एक-दूसरे से जुड़े हो।
- उदाहरण के लिए :- कोहनी , कंधा , अथवा गर्दन
- **संधि :-** हम शरीर के विभिन्न भागों को उसी स्थान से मोड़ अथवा घुमा पाते हैं , जहाँ पर दो हिस्से एक-दूसरे से जुड़े हो इन स्थानों को संधि कहते हैं।
- **कंदुक-खल्लिका संधि :-** सभी दिशाओं में गति करता है।
- घुटना हिंज संधि का एक उदाहरण हैं।
- **अचल संधि :-** हमारे सिर की कुछ संधियों में अस्थि हिल नहीं सकती ऐसे संधियों को अचल संधि कहते हैं।
- **कंकाल :-** हमारे शरीर की सभी अस्थियाँ ठीक इसी प्रकार शरीर को एक सुंदर आकृति प्रदान करने के लिए एक ढाँचे का निर्माण करती हैं इस ढाँचे को कंकाल कहते हैं।
- **पसली-पिंजर :-** पसलियाँ वक्ष की अस्थि एवं मेरुदंड से जुड़कर एक बक्से की रचना करती हैं इस शंक्रुपी बक्से को पसली-पिंजर कहते हैं।
- अस्थियाँ एवं उपस्थियाँ संयुक्त रूप से शरीर का कंकाल का निर्माण करते हैं।
- गति करने समय पेशियों के संकुचन से अस्थियाँ खिंचती हैं।
- **हिंज संधि :-** ऐसी संधि जो केवल आगे और पीछे एक ही दिशा में गति करती है उसे हिंज संधि कहते है।
- **केंचुए** में गति शरीर की पेशियों के बारी-बारी से विस्तरण एवं संकुचन से होती हैं।
- **पेशियों** के जोड़े के एकांतर क्रम में सिकुड़ने एवं फैलने से अस्थियाँ गति करती हैं।
- मछली के शरीर पर पंख होते हैं जो तैरते समय जल में संतुलन बनाए रखने में एवं दिशा निर्धारण में सहायता करते हैं।